International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 17-03-2022, Accepted: 03-04-2022, Published: 18-04-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 63-64

प्रसाद की कविता का मूल स्वर

आशुतोष कुमार द्विवेदी[1], पद्मिनी द्विवदी[2]

[1] प्राध्यापक, हिन्दी, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

[2] शोध केन्द्र, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
प्रसाद का विश्वास है कि इतिहास का पुनर्जागरण राष्ट्रीय उत्थान के लिए आवश्यक है। देश देश की परम्परा सभ्यता और संस्कृति उसे नवजीवन प्रदान करती है। प्रसाद ने सांस्कृतिक पुनरूत्थान का प्रयत्न किया। अपने व्यक्तिवादी रूप में भी वे वेदना, करूणा तथा प्रेम – दर्शन की अभिव्यक्ति करते हैं। क्रमशः एक उच्च भावभूमि पर जाते हुए प्रसाद आत्मवाद आनन्दवाद को अपनाते हैं। 'कामायनी' का कवि अपनी विचार धारा को आध्यात्मिक कलेवर प्रदान करता है, यद्यपि उसका व्यवहारिक पक्ष सबल है। इस प्रकार काव्य में प्रसाद की विचारधारा अनेक दिशाओं में प्रवाहित प्रतीत होती है।

मूल शब्दः प्रसाद की कविता, मूल स्वर

प्रस्तावना
प्रसाद का सहित्य एक सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित है। वे युग देश समाज और मानव की जिन समस्याओं को उठाते हैं, उनका समाधान भी प्रस्तुत करना चाहते हैं। इसमें संदेह नहीं कि विषय की विस्तृत विवेचना के लिए उन्होंने उपन्यास, नाटक, कहानी, निबन्ध अदि में गद्य के माध्यम से विचार किया, किन्तु काव्य में भी उसका आभास प्राप्त होता है। प्रसाद की सामामजिक विचारधारा का अधिक स्पष्ट रूप 'कंकाल' और 'तितली' में दिखाई देता है। समाज का नग्न रूप उन्होंने इन उपन्यासों में अंकित किया और धार्मिक आडम्बर, सामाजिक विशमता आदि को सामने रक्खा। नाटकों में प्रसाद का दृष्टिकोण ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक अधिक है। इतिहास से वे राष्ट्र की खोयी हुई चेतना को लौटा लाना चाहते हैं। उनका विष्वास है कि इतिहास का पुनर्जागरण राष्ट्रीय उत्थान के लिए आवष्यक है। देश की परम्परा सभ्यता और संस्कृति उसे नवजीवन प्रदान करती है। प्रसाद ने सांस्कृकि पुनरूत्थान का प्रयत्न किया। उपने व्यक्तिवादी रूप में भी वे वेदना, करूणा तथा प्रेम–दर्शन की अभिव्यक्ति करते हैं। क्रमशः एक उच्च भावभूमि पर जाते हुए प्रसाद आत्मवाद, आनन्दवाद को अपनाते है। 'कामायनी' का कवि अपनी विचारधारा को आध्यतिमक कलेवर प्रदान करता है यद्यपि उसका व्यावहारिक पक्ष सबल है। इस प्रकार काव्य में प्रसाद की विचारधारा अनेक दिशाओं में प्रवाहित प्रतीत होती है।

अध्ययन क्षेत्र
इतिहास के साथ भारतीय – सभ्यता संस्कृति के प्रति भी कवि का अनुराग है। वास्तव में ये सब एक दूसरे के इतना समीप हैं और उनमें एक विभाजन – रेखा खींच देना कठिन है। इस दृष्टि से प्रसाद में इनका समन्वित स्वरूप देखा जा सकता है। भारतीय इतिहास को प्रकाश में लाने के साथ कवि ने प्राचीन संस्कृति – सभ्यता को भी नयी व्याख्या देने का प्रयत्न किया। एक सांस्कृतिक पुन्रूत्थान की रेखाएँ उनके साहित्य में सबसे अधिक बलबती हैं। देश के इतिहास, संस्कृति के प्रति उन्हें जो मोह था, उसकी अभिव्यंजना के लिए उन्होंने कई अवलम्ब ग्रहण किये।
प्रसाद देश की वास्तविक सांस्कृतिक प्रतिष्ठा में प्रयत्नशील प्रतीत होते हैं। वे भारतीय आत्मवाद तथा सार्वभौमिक के पक्षधर हैं। कामायनी में मानव – संस्कृति की विजय घोषित की गयी है। प्रसाद ने 'निष्काम कर्म' को प्रतिष्ठित नहीं किया। वे कर्म के व्यापक प्रसार पर जोर देते हैं, जिसके अन्तर्गत समस्त मानवता आ जाती है।
प्रसाद मूलतः प्रसाद को मूलतः प्रेम – सौन्दर्य का कवि कहा जाता है। आदि से अन्त तक उनके सहित्य में प्रेम का स्वर थिरकता रहता है। प्रेम के प्रति व्यापक दृष्टिकोण कवि को सतत गतिमान करता है। अपनी प्रेम–कल्पना को प्रसाद ने दर्शन योग से प्रांजल बनाया। 'प्रेम–पथिक' में प्रेम का आदर्श रूप प्रस्तुत करते हुए कवि कहता है।

किन्तु न परमित करो प्रेम
सौहार्द विश्वव्यापी कर दो।

(प्रेम–पथिक)

व्यक्ति से व्यक्ति के प्रेम को केवल एक शारीरिक आकर्षण के आधार पर कवि ने चित्रित नहीं किया। प्रेम तो दो हृदयों का मधुर मिलन है जिसमें एक दूसरे का व्यक्तित्व अपनी पृथक सत्ता खो देता है। प्रेम के साथ प्रसाद सौन्दर्य को भी चेतना का उज्ज्वल वरदान मानते हैं। प्रेम के पति इस उदात्त कल्पना के सहारे प्रणयी जीवन की उच्चतम भावभूमि तक जाता है। व्यक्ति से आरम्भ होकर यह प्रेम – भावना मानव तक प्रसारित होती हैं। प्रेम साधारण प्रणय की भाँति नहीं है, जो केवल दो प्राणियों के बीच की वस्तु बन जाता है, किन्तु उसका क्षेत्र व्यापक है। मनु को प्रेम करने वाली श्रद्धा सम्पूर्ण मानवता के कल्याण की कामना करती है।

प्रसाद का दृष्टिकोण सांस्कृतिक अधिक है। वे किसी क्रान्तिकारी कवि की भाँति उद्‌बोधन गीत नहीं गाने लगते किन्तु क्रमशः एक ऐसी परिस्थिति की योजना करते हैं, जिसमें राष्ट्र की संस्कृति और परम्परा का चित्र हो। 'स्कन्दगुप्त' में मातृगुप्त ने जो राष्ट्रगीत गाया है उसमें कवि ने देश के एक दीर्घ इतिहास को लिपिबद्ध किया है। नाटकों में राष्ट्रीय भावना अवष्य अधिक प्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत हुई, किन्तु काव्य में वह सांस्कृतिक संकेत देती है, रवीन्द्र की तरह।

प्रसाद की विचारधारा के पीछे उनका मानवीय स्वर है। जीवन के शावत उपादानों को लेकर उन्होंने काव्य का निर्माण किया। समाज और युग परिवर्तित हो जाते हैं, किन्तु मानवीय भावनाओं के कुछ पक्ष बराबर जीवित रहते हैं। सुख–दुख, प्रेम–घृणा, जीवन–मरण आदि प्रष्न बने ही रहते हैं। जो रचनाकार जितना अधिक महान होता है, वह जीवन की उतनी ही विस्तृत समस्याओं पर विचार करता है। प्रसाद मानव को सर्वोपरि करते हैं। मनु मानवता का ही प्रतीक है और आन्तरिक भावनाएँ व्यक्तिगत न होकर समाजगत हैं। वे मानव–मन का प्रतिनिधित्व करती हैं और उसमें जीवन की गहनता है। श्रद्धा के द्वारा कवि ने मनु को जागृत सन्देश सुनाया वह मानवता के लिए है।

यह नीड़ मनोहर कृतियों का
यह विश्व कर्म – रंगस्थल है
है परम्परा लग रही यहाँ
ठहरा जिसमें जितना बल है।

(कामायनी)

प्रसाद ने मानव मुक्ति का शाश्वत स्वर दिया, 'कामायनी' में उनका मानववाद अपने प्रांजल रूप में आया है जहाँ मानवता के लिए अनेक मंगलमय सन्देश मिलते हैं।

निष्कर्ष

प्रसाद काव्य की चेतना अपने युग समाज और इतिहास से प्रभावित है। प्रसाद एक जागरूक कवि हैं और परिस्थिति की अवहेलना नहीं करते। बिखरी हुई सामग्री को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास करते हुए उन्हें देखा जा सकता है विष्व के महान कृतिकारों के समीप उनके सम्पूर्ण कृतित्व को रखने से प्रतीत होता है कि प्रसाद की प्रवृत्तियाँ श्रेष्ठ निर्माता की–सी हैं और उनमें मानव – मूल्य हैं।

सन्दर्भ सूची

1. प्रेम – पथिक – जयशंकर प्रसाद, सम्पादक–रत्नशंकर प्रसाद, लोक भारती लोक भारती प्रकाशन 15–ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1
2. कामायनी – ''
3. प्रसाद का काव्य – लेखक–प्रेमशंकर, भारती भंडार, लीडर भवन, 3 लाडर मार्ग, इलाहाबाद